श्री जयराम ब्रह्मचर्य आश्रम

आश्रम चौक (देहली)

नव निर्मित मन्दिर

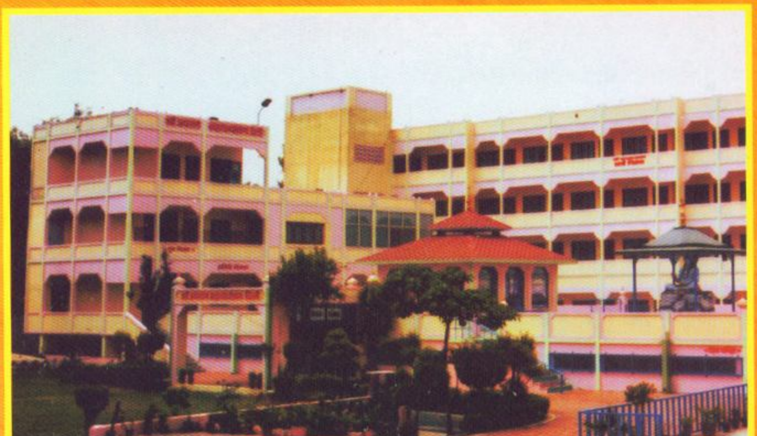

नव लोकार्पित भवन

श्री जयराम परम्परा के महापुरुष एवं लोकमंगल कार्य

प्रियधर्मप्रेमीबन्धुओं!

मानव कल्याण की शुभ भावना, आत्मोत्थान की उदात्त अन्तर्भावना तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नयन की कमनीय लोकमंगल कामना से अभिभूत परमतपस्वी, वीतराग, पुण्यात्मा, नैष्ठिकब्रह्मचारी आदिगुरू श्री जयराम जी महाराज ने वि०सं० १९४८ में भगवतीभागीरथी गंगा के पावन तट ऋषिकेश में श्रीजयराम अन्नक्षेत्र की स्थापना का जो शुभ मूहुर्त प्रारम्भ किया वह अद्यावधि उत्तरोत्तर सतूत संवर्धनशील है। पूज्य जयराम जी महाराज ने गो, गंगा, गीता, गायत्री तथा संस्कृत सेवा के जिन संस्कारों का बीजारोपण किया था वह आज विशाल वटवृक्ष के रूप में समस्त मानव समाज को शीतल छाया एवं जीवनदायिनी प्राणवायु प्रदान कर रहा है। श्री जयराम परम्परा में अतिशय कर्मठ, परम तपस्वी, वैराग्यनिष्ठ स्वनामधन्य विद्वान संतो की पावन श्रृंखला रही है जिनमें ब्रह्मचारी कूटस्थ जी महाराज, ब्रह्मचारी श्री शादीराम जी महाराज, ब्रह्मचारी श्री हरिपुष्प जी महाराज, ब्रह्मचारी श्री गंगास्वरूप जी महाराज, ब्रह्मचारी श्री देवेन्द्र स्वरूप जी महाराज तथा ब्रह्मचारी श्री नारायण स्वरूप जी महाराज का प्रात:स्मरणीय पावन नाम कोटिश:मननीय तथा वन्दनीय है।

इसी उत्कृष्ट परम्परा में ब्रह्मचारी श्री हरिपुष्प जी महाराज ने अपने गुरु भाईयों के साथ मिलकर देहली में किलोकड़ी गाँव(आश्रमचौक)में संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु श्री जयराम ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना की थी। ब्रह्मचारी श्री हरिपुष्प जी महाराज ने कालिन्दी के पावन तट पर तपस्या हेतु जिस समय आश्रम की नींव यहाँ रखी उससे पूर्व यहाँ अन्य कोई भी आश्रम नहीं था।जयराम ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना के बाद यह सम्पूर्ण क्षेत्र आश्रम चौक के नाम से प्रसिद्ध होगया,तभी से इस सम्पूर्ण स्थान को आश्रम चौक के नाम से जाना जा रहा है। तत्कालीन ब्रह्मचर्याश्रम की समस्त भूमि में अनारों का एक बाग था जो अत्यन्त रमणीय था, इसी पवित्र उपवन के परिवेश में सैकड़ो ब्रह्मचारी वेदाध्ययन एवं संस्कृत शास्त्रों का आद्योपान्त अध्ययन करते थे। आश्रम में ब्रह्मचारियों के नित्य यज्ञ हेतु एक चतुर्मुखी यज्ञशाला का निर्माण कराया गया था जो आज भी अवशेष के रूप में विद्यमान है। ब्रह्मचारी श्री हरिपुष्प जी महाराज परम दयालु एवं परोपकारी महापुरुष थे। परोपकार की परम्परा का परिपालन करते हुए पूज्य श्री हरिपुष्प जी महाराज ने आश्रम हेतु अपेक्षित भूमि रखकर शेष सम्पूर्ण भूमि ब्राह्मणों को दान में देकर हरिनगर ग्राम की स्थापना की तथा ग्रामवासियों के अनुरोध पर एक शिव मन्दिर का भी निर्माण कराया जहाँ आज भी पूजार्चन की परम्परा प्रचलित है।

परमाराध्य प्रात:स्मरणीय सद्गुरूदेव भगवान पूज्य ब्रह्मचारी श्री देवेन्द्र स्वरूपजी महाराज ने जयराम संस्थाओं की अद्भुत उन्नति कर लोककल्याण एवं जनहित के अनुपम सृजनात्मक कार्य किये जो मील के पत्थर की भाँति विद्यमान हैं। इस ब्रह्मचर्याश्रम के लिए महाराज जी का जो संकल्प था उस संकल्प पथ पर चलते हुए, उनकी कृपा का सतत् स्मरण करते हुए आप सभी की सेवा में आश्रम का यह भव्य भवन समर्पित है। आश्रम किसी व्यक्ति विशेष का नहीं अपितु चिन्तन एवं वैचारिक मेधा का केन्द्र होता है अत एव आश्रम की परिधि व्यक्ति विशेष की सीमा से सीमित नहीं अपितु राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व इसकी चिन्तन परिधि में समाविष्ट है।

हमारी भारतीय परम्परा आत्मकेन्द्रित नहीं है। हम इदं न मम का पाठ करते हुए वसुधैव कुटुम्बकम् का उपदेश करते हैं। वेदों एवं उपनिषदों के इसी भाव को हृदयंगम करते हुए आपके परिश्रम एवं सहयोग से विनिर्मित यह नवनिर्मित भवन आप सभी की सेवा में समर्पित है। साथ ही जयराम आश्रम की समस्त संस्थाएँ गंगा, गीता, गायत्री गो सेवा तथा जनहित एवं राष्ट्रहित के कार्यो में प्रमाद रहित होकर सतूत समर्पित रहें ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

आपका
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

गुरुपरम्परा

श्री जयराम ब्रह्मचारी जी महाराज

आश्रमीय गतिविधियाँ

सम्प्रति आश्रम में आधुनिक सुख सुविधाओं से सुसज्जित लगभग (१०५) ए.सी. कमरों का निर्माण किया गया है जिनमें सन्त महात्माओं, भक्तों, शिष्यों, अनुयायियों, धर्मप्रेमियों तथा जरूरत मंद लोगों को आवास की व्यवस्था प्रदान की जा रही है।

१. आश्रम में नित्य प्रति पूजा अर्चना, हवन,

२. संत महात्माओं तथा यात्रियों को नि:शुल्क भोजन।

३. वेदाध्ययन परायण विद्यार्थियों को नि:शुल्क अध्ययन- अध्यापन, आवास एवं भोजन।

४. आश्रम में श्री मद्भागवत कथा, श्री राम कथा।

५. शत् चण्डी यज्ञ, सहस्र चण्डी महायज्ञ।

६. महामृत्युंजय जप, गायत्री पुरश्चरण।

७. गृहप्रवेश, विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार तथा सुख शांतिमय जीवन एवं आरोग्य प्राप्ति हेतु विद्वान् वैदिक ब्राह्मणों द्वारा पूजा/अनुष्ठान की व्यवस्था सम्पन्न की जाती है।

समाजसेवा में समर्पित

श्री जयराम संस्थाएँ

श्री जयराम आश्रम, भीमगोड़ा, हरिद्वार

⁜ उत्तराखण्ड

- श्री जयराम अन्नक्षेत्र ट्रस्ट, ऋषिकेश
- श्री जयराम संस्कृत महाविद्यालय, ऋषिकेश
- श्री जयराम होम्योपैथिक अस्पताल, ऋषिकेश
- श्री जयराम आदर्श गौशाला, ऋषिकेश
- श्री जयराम कृषि फार्म गुमानीवाला, ऋषिकेश
- श्री शिवकुटी आश्रम, ऋषिकेश
- श्री देवेन्द्रस्वरूप ब्रह्मचारी इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल, ऋषिकेश
- श्री जयराम अस्पताल, भोमगोड़ा, हरिद्वार
- श्री कस्तूरी राम मणिद्वीप आश्रम, खड़खड़ी, हरिद्वार
- श्री जयराम निवास, खड़खड़ी, हरिद्वार
- श्री गंगास्वरूप आश्रम, भूपतवाला, हरिद्वार
- श्री आशुतोष आश्रम, कनखल

श्री गंगा स्वरूप आश्रम, हरिद्वार

⁜ हरियाणा

- श्री जयराम विद्यापीठ, कुरुक्षेत्र
- श्री काम्यकेश्वर महादेव मन्दिर, कुरुक्षेत्र
- श्री सेठ नवरंगराय लोहिया जयराम गर्ल्स कालेज, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र
- श्रीमती केसरी देवी लोहिया पब्लिक स्कूल, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र
- श्री सेठ नवरंगराय लोहिया जयराम महिला अस्पताल, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र
- श्री हरबक्श लोहिया जयराम गर्ल्स पॉलिटेक्निक, लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र
- श्री जयराम शिक्षा महाविद्यालय एवं शोध केन्द्र लोहार माजरा, कुरुक्षेत्र
- श्री जयराम नेत्र एवं प्रसूति अस्पताल, नरवाना, जीन्द
- श्री जयराम पंचायती गौशाला, बेरी, झज्जर
- श्री जयराम पंचायती गौशाला, जाखोली, सोनीपत
- ब्रह्मचारी श्री जयराम तपोभूमि (आश्रम) सोनीपत
- श्री जयराम आदर्श गौशाला, सोनीपत

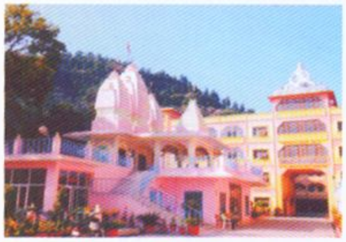

श्री कस्तूरीराम मणिद्वीप आश्रम, हरिद्वार

- श्री जयराम आश्रम संस्कृत महाविद्यालय सोनीपत, हरियाणा
- श्री जयराम गुरुदयाल गौशाला, जीन्द

⁜ उत्तर प्रदेश

- श्री जयराम आश्रम, वृन्दावन

⁜ **दिल्ली :** श्री जयराम ब्रह्मचर्य आश्रम ट्रस्ट, १०६, हरिनगर, मथुरा रोड, नई दिल्ली

सौजन्य - श्री प्रयागचन्द गोयल, श्री रामलाल गोयल, श्री पुरुषोत्तम गोयल
सारा देवी चैरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली

अग्रिम योजना - श्री बद्रीनाथ धाम में श्री जयराम आश्रम का निर्माण